A

सत्रीय कार्य 2024
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर
कोर पाठ्यक्रम, हिन्दी
मध्यकालीन हिन्दी कविता

- प्रत्येक इकाई में प्रत्येक प्रश्न का भाग 'क' एवं 'ख' अति लघुउत्तरी प्रश्न हैं जिनके उत्तर एक या दो वाक्यों में दें।
- प्रत्येक इकाई के भाग 'ग' सप्रसंग व्याख्या हैं।
- भाग 'घ' दीर्घ उत्तरी प्रश्न के उत्तर 400 से 450 शब्दो में दे।

इकाई 1

(क.) कबीर का जन्म कब हुआ था । उनके गुरू का नाम बताइये 1 अंक

(ख.) कबीर की रचनाओं का नाम लिखिए। 1 अंक

(ग.) निम्न में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 3 अंक

सतगुरू की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार ।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनन्त दिखावणहार ।।

अथवा

राम नाम कै पटतरै, देबे को कुछ नाहिं।
क्या लै गुरू संतोषिये, हौंस रही मनमांहि ।।

(घ) " कबीर महान समाज सुधारक थे " इस कथन को 5 अंक विस्तारपूर्वक समझाइये ।

अथवा

कबीर दास के रहस्यवाद को विस्तारपूर्वक समझाइये ।

क्रमशः 2

इकाई 2

(क) सूरदास की रचनाओं के नाम लिखिए । 1 अंक

(ख) अष्टछाप के किसी एक कवि का नाम लिखिये । 1 अंक

(ग) निम्न में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । 3 अंक

तबहिं उपंगसुत आय गए

सखाः सखा कछु अंतर नहीं भरि – भरि अंक लए।।

अति सुंदर तन स्याम सरिखो, देखत हरि पछिताने।

ऐसे को वैसी बुधि होति, ब्रज पठवै तब आने ।

या आगे रस – काव्य प्रकासे जोग – वचन प्रगटावै।

सूर ज्ञान दृढ़ याके हिरदय जुवतिन जोग सिखावै ।

अथवा

जदुपति लख्यो तेहि मुसकात।

कहत हम मन रही जोई सोइ भई यह बात ।।

वचन परगट करन लागे प्रेम कथा चलाय ।

सुनहु उद्धव मोहि ब्रज की सुधि नहीं बिसराय।।

रैनि सोवत, चलत, जागत लगत नहिं मन आन।

नंद जसुमति नारि नर ब्रज जहां मेरो प्रान।

कहत हरि, सुनि उपंगसुत । यह कहत हौं रस रीति।

सूर चित तैं टरति नाहीं राधिका की प्रीति ।।

(घ) सूरदास की भक्ति–भावना पर प्रकाश डलिए। 5 अंक

अथवा

सूरदास के काव्य में वियोग श्रृगार का वर्णन कीजिए ।